शब्दों की सिसकी

सियास कुमार

शब्दों की सिसकी

By Sidas Kumar

Shabdon Ki Siski © 2025 Sidas Kumar.

All rights reserved. No part of this book may be copied, reproduced, stored, or transmitted in any form—whether electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise—without the prior written consent of the author, except for brief excerpts used in reviews or critical discussions.

First Edition: 2025

ISBN:

This is a work of poetry. Any resemblance to real persons, living or dead, or actual events is purely coincidental. The views expressed in this book are those of the author and do not reflect any official stance of any organization.

Published by: Sidas Kumar

For permissions, inquiries, or collaborations, contact:
sidaskumar@gmail.com

Dedication

रवींद्रनाथ टैगोर और कबीर को—

आपके स्वर जो समय की सीमाओं को लांघ जाते हैं,

आपकी कृतियाँ जिन्होंने शब्दों को आत्मा बना दिया।

आप जीवन और परे के स्वप्नद्रष्टा, जिन्होंने मुझे साधारण

से परे देखना सिखाया।

आपका जीवन एवं काव्य मेरे लिए प्रकाशपथ रहे हैं,

जिन्होंने मुझे दुनिया को केवल आँखों से नहीं,

बल्कि हृदय से देखना सिखाया।

यह पुस्तक अस्तित्व में है क्योंकि आपकी पंक्तियों ने मुझे

और मेरे अंतर्मन को छू लिया है।

प्रेम सहित,

सिदास कुमार

Poetry is the language of emotions.

कविता भावनाओं की भाषा है,

जहाँ शब्द नहीं, आत्मा बोलती है।

Preface

दर्द को सिर्फ महसूस किया जा सकता है, उसे पूरी तरह शब्दों में बाँध पाना नामुमकिन है। पर मैंने फिर भी इसे शब्दों में ढालने की कोशिश की है।

जब भी मैंने किसी को पीड़ा में देखा, उसकी आँखों में अनकही कहानियाँ पढ़ीं, उसकी खामोशी में छुपे दर्द को महसूस किया—मैंने जाना कि भावनाओं को अभिव्यक्त करना कितना आवश्यक है। यह पुस्तक उन्हीं क्षणों से जन्मी है, जहाँ मैंने दूसरों के दुख में अपना दुख, और उनकी तकलीफ़ में अपनी आवाज़ सुनी, एक अदृश्य पुकार सुनी।

मैं उन चीखों को शब्द देना चाहता था, जो बाहर नहीं आ सकीं। उन दर्द भरी कहानियों को आवाज़ देना चाहता था, जो चुपचाप दबी रह गईं। मेरी कविताएँ केवल शब्द नहीं हैं; यह मेरी संवेदनाएँ, मेरी चिंताएँ, और मेरे भीतर उमड़ता दर्द भी हैं। यदि ये पंक्तियाँ किसी एक व्यक्ति के हृदय को छू सकें, उसे अपनी भावनाओं को समझने का एक जरिया दे सकें, तो मेरा लेखन सार्थक हो जाएगा।

यह पुस्तक उन सभी के लिए है **जो महसूस करते हैं।**

यह पुस्तक उनके लिए है—
जो सहते हैं, पर कहते नहीं।
जो हंसते हैं, पर भीतर रोते हैं।
जो दुनिया से छुपकर, खुद से लड़ते हैं।

यह पुस्तक उन सबके लिए भी है जो दुनिया को और बेहतर करना चाहते हैं।

यह सिर्फ कविताओं का संग्रह नहीं, यह उन अनकही भावनाओं की प्रतिध्वनि है, जो हम सबने कभी न कभी महसूस की हैं।

सिदास कुमार

PART ONE

Index of Poems

कोरोना	11
पानी और एक क़िस्सा	14
इंसाफ़ की उम्र	18
जानवर इंसान या गाय	22
टूटे हुए काँच की रूह	24
सपनों का कोटा	26
जंगल की लाश पर दस्तख़त	30
धर्म की दीवार	34
एक थाली का भार	37
भीड़ रेल और तुम्हारी विकास-यात्रा	39
इंसानियत के कैंसर	42
सरकारी मुलाज़िम	46
गरीब जिन्दा लोग	50
सबसे बड़ा तमाशा	54
ब्यूरोक्रेसी का चेहरा	57
810 रुपये की चमच्च	61
बँटा हुआ आईना	63
ईंट से ईंट बजा दी	65

वादों का सौदागर	70
जो लौटकर घर नहीं गए	74
जन्मदिन	78
35 हज़ार की तनख़्वाह	80
जो हमें कभी इंसान न बनने देगी	83
लोकतंत्र का गँगा स्नान	87
महँगाई की रसीद	91
अफ़सर की मोहर	95
गंगा की देह पर ज़ख़्म उभर आए हैं	97
उम्मीदों के बही-खाते	100
सरकारी शिक्षा योजना।	104
एक FIR	107
रूहें जो प्लेटफ़ॉर्म पर रह गईं	112
हिसाब का खेल	116
बस कुछ कर नहीं पा रहा हूँ	119

कोरोना

किसने सोचा था कि हवा भी एक दिन ज़हर बन जाएगी?
साँस लेना किसी जुर्म सा लगेगा?
हाथ मिलाने की रस्में किताबों में दफ्न हो जाएँगी?
और माँ अपने ही बेटे को गले लगाने से पहले डर जाएगी?

किसने सोचा था कि दरवाज़े यूँ बंद रहेंगे,
जैसे घरों ने अपनी साँसें रोक ली हों?
सड़कों पर सिर्फ़ खामोशी बिछी होगी,
और शहरों में परिंदे भी ख़ुद को अकेला महसूस कर रहे होंगे?

कोरोना...
बस एक नाम नहीं,
एक न दिखने वाली आग थी,
जो फेफड़ों में नहीं,
रिश्तों में जल रही थी।

इंसाफ़ की उम्र

इंसाफ़ जब पैदा होता है,
तो उससे पहले ही कफ़न सिल दिया जाता है।
उसकी आँखें खुलने से पहले,
फाइलों में उसकी मौत दर्ज हो जाती है।
वो बच्चा है—
मगर अदालत की दहलीज़ तक आते-आते,
बाल सफ़ेद हो जाते हैं।

यहाँ इंसाफ़ वक्त से तेज़ नहीं,
बल्कि वक्त के नीचे दबा होता है।
एक माँ का बेटा मरता है,
और उसकी गोद में अदालत की तारीख़ें पलती हैं।
एक बाप अपनी बेटी के लिए गवाही देता है,
मगर फैसला तब आता है,
जब उसकी आँखें दुनिया देखना छोड़ चुकी होती हैं।

Eight

धर्म की दीवार

धर्म एक नदी थी,
जो इंसानियत की प्यास बुझाने आयी थी।
मगर हमने इसे तालाब बना दिया,
जिसमें हर कोई अपनी गंदगी धोने लगा।

धर्म एक दिया था,
जो अंधेरे को चीरने के लिए जलाया गया था।
मगर हमने इसे मशाल बना दिया,
जिससे बस्तियाँ जलाई जाने लगीं।

धर्म कोई दीवार नहीं थी,
जिसके इस पार हिंदू, उस पार मुसलमान हो,
मगर हमने इसे एक नक्शे में तब्दील कर दिया,
जिसमें इंसानियत की कोई सरहद नहीं रही।

मंदिर की घंटी और मस्जिद की अज़ान,

सरकारी मुलाज़िम

कुर्सी पर बैठा शख़्स,
ख़ुदा नहीं है,
मगर फ़रमान उसी के चलते हैं।
वो कलम नहीं पकड़ता,
क़िस्मत की डोर पकड़ता है,
फ़ाइलों के नीचे दबे अरमान,
उसके होंठों की मुस्कान में जलते हैं।

मुलाज़िम भी दो क़िस्म के होते हैं—
एक जो घड़ी देखता है,
एक जो घूस देखता है।
घड़ी देखने वाला भी
बस दो काम करता है—
आने का इंतज़ार, जाने का इंतज़ार।
और घूस देखने वाला,
उसी काग़ज़ को ज़िंदा करने का सौदा करता है,

पर यह दिन सिर्फ़ वह दिन नहीं है,
यह शिनाख्त है कि तुम अब भी ज़िंदा हो,
धड़कनों ने तुम्हें अभी तक रद्द नहीं किया,
सांसें तुम्हारे होने की तसदीक़ कर रही हैं।

कितने लोग हैं,
जो इस सफ़र में ही खो गए हैं?
कितनों ने तो बस साँसों को जमा किया है,
पर कभी ज़िन्दगी को जी नहीं पाए?
कितने हैं, जिनकी आँखों ने बस तारीख़ बदली है,
मगर अपने अंदर कुछ नया उगा नहीं पाए?

तो तय कर लो!
तुम इस जन्मदिन को केक के टुकड़ों में बाँटोगे,
या फिर अपनी रगों में कोई नया ख़्वाब बहाओगे?
तुम इस दिन को एक तारीख़ मानोगे,
या फिर इस दिन को अपने सबसे बड़े क़िस्से की शुरुआत बनाओगे?

ये दिन नहीं, तुम्हारी क़िस्मत की ख़ाली किताब है।
तो चलो लिखो, या फिर किसी और के लिखे में गुम हो जाओ।

बस एक बार थाम लूँ उन्हें,

बस एक बार कंधा दे दूँ,

बस एक बार उनके आँसू अपने हाथों से पोंछ दूँ...

मेरी आँखें जल रही हैं,

दिल फट रहा है,

मन बार-बार चाहता है कि

मैं इनकी तक़दीर बदल दूँ,

इनकी चीखें ख़रीद लूँ,

इनके आँसू खुद पी लूँ,

पर मेरे हाथ ख़ाली हैं,

मेरी रूह बेजान है,

और मेरा दिल बस

ख़ुद को बुज़दिल कहकर कोस रहा है।

मैं चाहता हूँ कि ये ख़्वाब हो,

पर ये ख़्वाब नहीं,

ये मेरा देश है,

जो अब शमशान में तब्दील होता जा रहा है...

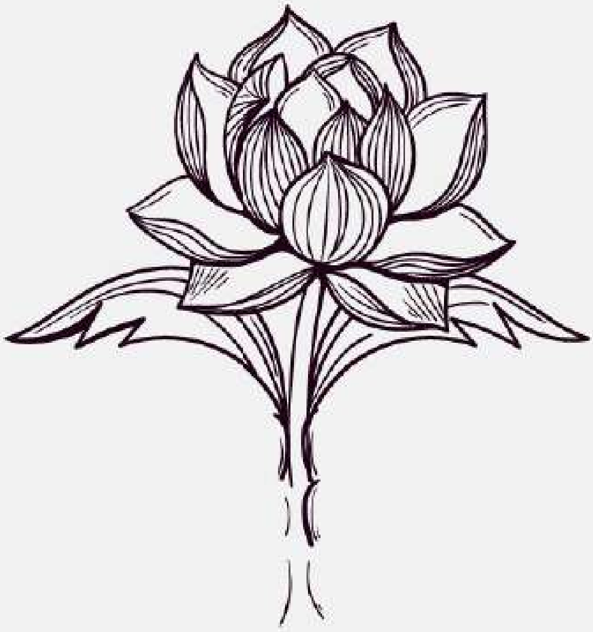

Acknowledgments

किसी भी शब्द को जन्म देने के लिए भावनाओं का सहारा चाहिए, और इस पुस्तक के हर शब्द के पीछे वे लोग हैं, जिन्होंने मुझे महसूस करना सिखाया, लिखने की प्रेरणा दी, और इस सफर में मेरा साथ दिया।

सबसे पहले, मैं रवींद्रनाथ टैगोर और कबीर का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी रचनाएँ मेरे लिए एक प्रकाशपथ रहीं। उनकी कविताओं ने मुझे सिखाया कि शब्द सिर्फ कागज़ पर नहीं बल्कि दिलों में भी घर बना सकते हैं।

एक और मार्गदर्शक, जिन्होंने बिना एक शब्द कहे मुझे जीवन का सबसे अनमोल सबक दिया। मैं आचार्य सनातन को हृदय से नमन करता हूँ। वे मूक थे, लेकिन उनके मौन में वो गूंज थी, जो शब्द कभी व्यक्त नहीं कर सकते। उनकी दृष्टि, उनके भाव, उनकी उपस्थिति—सब कुछ मेरे लिए एक शिक्षा थी। उन्होंने मुझे सिखाया कि सच्ची समझ शब्दों में नहीं, अनुभूति में होती है; और कभी-कभी मौन ही सबसे शक्तिशाली भाषा बन जाती है।

मेरे अपने जनों का दिल से धन्यवाद, जिन्होंने हर कदम पर मेरा हौसला बढ़ाया। उनकी मूक सहानुभूति और निःस्वार्थ प्रेम ही मेरी सबसे बड़ी ताकत रही है।

मेरे दोस्तों और उन सभी आत्माओं का आभार, जिनकी कहानियाँ, अनुभव और संघर्षों ने मुझे गहराई से सोचने और लिखने के लिए प्रेरित किया। आपके शब्द, आपकी तकलीफ़ें, आपकी हँसी—सब कुछ मेरी कविताओं में धड़कता है।

इस किताब को आकार देने में जिसने भी मेरी मदद की—मेरे पाठकों, आलोचकों, और उन अनजान लोगों का धन्यवाद, जिनसे मैं कभी मिला नहीं, पर जिनकी पीड़ा ने मुझे लिखा।

और अंत से लेकर पुनः नए प्रारम्भ तक, आपका धन्यवाद—आप, जो इस पुस्तक को अपने समय और भावनाओं से अपनाने जा रहे हैं। यदि मेरी कविताएँ आपके हृदय को छू सकें, उसे आपकी भावनाओं और उद्देश्यों को पथ देने की शक्ति दे सकें, तो यही मेरे लेखन का सबसे बड़ा उद्देश्य होगा।

सप्रेम,
सिदास कुमार

Contact & Support

आपकी प्रतिक्रियाएँ और भावनाएँ मेरी लेखनी का संबल हैं। यदि मेरी रचनाएँ आपके हृदय को छूती हैं और आप मेरे लेखन सफर का हिस्सा बनना चाहते हैं या मेरी आगामी रचनाओं के बारे में जानना चाहते हैं –

तो आप मुझसे निम्न माध्यमों से जुड़ सकते हैं:

Email: sidaskumar@gmail.com
social media-
Twitter/X: **Sidaskumar**
Instagram: **sidaskumar**
Facebook: **thesidaskumar**

Love & Support:
यदि आप मेरे लेखन को और अधिक समर्थन देना चाहते हैं, तो आप यहाँ योगदान कर सकते हैं:

आपका हर संदेश, प्रतिक्रिया और सहयोग मेरे लिए अमूल्य है!

मैंने किताब खोली,
तो अन्दर से धूल की बजाय,
सदियों की खामोशी उठी...
बुल्कुल जैसे किसी वीरान मक़बरे में
रुका हुआ कोई सांस ले रहा हो।

हर सफ़हा, एक दरवाज़ा था,
जिसके पीछे कोई कहानी कफ़न ओढ़े
पड़ी थी,
जिसे ज़माने ने पढ़ा नहीं,
बस वक्त के नीचे दफ़्न कर दिया।

कुछ अल्फ़ाज़, ग़मगीन मोमबत्तियों
की तरह टपक रहे थे,
जिन्हें शायद किसी तहरीर ने आँसू
कहकर अपनाया था,
या किसी दिल ने दुआ समझकर ओढ़
लिया था।

मैंने उंगलियों से हर लफ्ज़ को छुआ,
तो काग़ज़ की रगों में सोए हुए दर्द
जागने लगे,
जैसे किसी गुमनाम शायर के ख़तों में
छुपे आँसू
अचानक क़लम के घाव से टपकने
लगे हों।

किताब का एक कोना मुड़ा हुआ
मिला,
शायद किसी ने आख़री बार उम्मीद
वहीं छोड़ी थी,
या फिर कोई दुआ वहीं अटक गई थी,
जिसे ख़ुदा ने सुनने से पहले
किसी अलमारी में रख दिया था।

मैंने आख़िरी पन्ने तक पहुँचते-पहुँचते
ख़ुद को एक कब्रगाह में पाया,
जहाँ हर अल्फ़ाज़ एक ईंट था,
हर पैराग्राफ़ एक मक़बरा,
और हर ख़ामोशी, एक मिट्टी की तह
थी
जो किसी न किसी हक़ीक़त को छुपा
रही थी।

किताब को बंद किया,
तो लगा जैसे मैंने किसी पुराने दोस्त
को दफ़्न कर दिया हो,
जो बरसों से सिर्फ़ इतना चाहता था
कि कोई उसे एक बार,
बस एक बार,
पूरी शिद्दत से पढ़ ले।

Sidas Kumar

मैं एक संक्षिप्त कवि हूँ, स्वयं के द्वंद्व में उलझा, बहुरूपी चरित्र से जूझता, अपनी व्यक्तिगत पहचान को खोजता, आतंरिक बिम्ब में देखता सिर्फ एक संक्षिप्त कवि। शब्द मेरे लिए केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि आत्मखोज का माध्यम हैं। मेरी कविताएँ उन्हीं भावनाओं का प्रतिबिंब हैं, जो कहना तो बहुत कुछ चाहती हैं, पर अक्सर मौन रह जाती हैं।